ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 25 कुल पृष्ठ-8 8 से 14 दिसम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. शु.-15

आर्य समाज पाबूपुरा, जोधपुर के 48वें स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रकथा एवं मातृ शक्ति जागरण महोत्सव का भव्य आयोजन

नारी के सम्मान तथा राष्ट्र के उत्थान में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है – स्वामी आर्यवेश

महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष अभियान चलाया जाये – बिरजानन्द एडवोकेट

राष्ट्र की उन्नति के लिए आर्य समाज जैसी राष्ट्रवादी संस्था को मजबूत बनाया जाये – मनीषा पंवार 'विधायक'

महिलाओं को अधिकार दिलाने में महर्षि दयानन्द जी का सर्वाधिक योगदान रहा है –कीर्ति सिंह भील

नारी को गौरवान्वित करने से ही राष्ट्र गौरवान्वित होगा – पुष्पा शास्त्री

आर्य समाज पाबूपुरा, जोधपुर, राजस्थान के 48वें स्थापना दिवस के अवसर पर 7 दिसम्बर, 2022 को विशाल राष्ट्रकथा एवं मातृ शक्ति जागरण महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सभा के मंत्री श्री कमलेश शर्मा जी, साध्वी पुष्पा शास्त्री जी आदि विशेष रूप से पधारे। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज पाबूपुरा के तत्वावधान में किया गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे यज्ञ से किया गया तथा 10 बजे स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ विधिवत रूप से 10.30 बजे हो गया था जिसमें सर्वप्रथम इस आयोजन के अध्यक्ष श्री भंवरलाल हठवाल ने अतिथियों एवं विद्वानों का स्वागत करते हुए उनके सम्मान में स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए जोधपुर के प्रसिद्ध गायक श्री मोईनुद्दीन मनचला, श्री महेन्द्र सिंह पंवार, श्री दिलीप गवईया, श्री गजेन्द्र राव आदि की मंडली ने महर्षि दयानन्द को समर्पित भजनों के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। अपने भजनों के द्वारा इन्होंने देशभक्ति के विचार भी प्रस्तुत किये।

इसके पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट का ओजस्वी उद्बोधन हुआ और उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान के लिए विशेष व्यवस्था करने का सुझाव देते हुए कहा कि केवल नारों से नहीं बल्कि अपनी मानसिकता बदलने से ही महिलाओं का सम्मान एवं सुरक्षा हो सकती है। श्री बिरजानन्द जी ने आंकड़ों के आधार पर बताया कि 75 वर्ष के बाद भी देश में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को उचित स्थान एवं सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है। अतः यह आवश्यक है कि उन्हें हर क्षेत्र में बराबर का सम्मान मिले और कार्य करने का अवसर दिया जाये।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए जन–जाति विकास समिति की अध्यक्ष श्रीमती कीर्ति सिंह भील ने महिलाओं को अधिकार दिलाने में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के योगदान को स्मरण किया और उन्होंने कहा कि आज हम महिला होने के बावजूद जो कुछ कर पा रही हैं, उसमें आर्य समाज और स्वामी दयानन्द जी की ऐतिहासिक भूमिका है। उन्होंने आर्य समाज में आदिवासी तथा गरीब लोगों को अधिक से अधिक सम्मिलित करने की बात कही।

जोधपुर शहर की विधायक बहन मनीषा पंवार ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि एक आर्य समाजी परिवार में मेरा जन्म हुआ और बचपन से ही मुझे आर्य समाज की विचारधारा से परिचित होने का अवसर मिला। मेरे पिता स्व. श्री रामसिंह आर्य की हम दो बेटियाँ हैं, किन्तु उन्होंने हमें बेटों की तरह से लालन–पालन करके पढ़ाया और आगे बढ़ाया जिसके परिणामस्वरूप आज मैं आप सब लोगों की विधायक के रूप में सेवा कर पा रही हूँ।

वैदिक विदुषी पुष्पा शास्त्री ने अपनी ओजस्वी वाणी से महिलाओं को विशेष रूप से उत्साहित किया और उन्हें पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार से लड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि नारी के गौरव को प्रतिष्ठित करने के लिए आर्य समाज को रचनात्मक योजना बनाकर कार्य करना चाहिए। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने सबसे पहले स्त्री शिक्षा की आवाज उठाई और बाल–विवाह, सतीप्रथा एवं देवदासी प्रथा आदि बुराईयों के विरुद्ध शंखनाद किया। दुनिया में आज महिलाएँ लगातार आगे बढ़ रही हैं इसके पीछे स्वामी दयानन्द जी का सबसे बड़ा योगदान है।

शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

भारतीय संस्कृति और नारी

– श्री कृष्णचन्द्र टवाणी

विश्व में कई जातियां आईं और उत्थान की एक क्षणिक आभा विकीर्ण कर सदा के लिए अस्त हो गईं। आज उनका अस्तित्व केवल इतिहास के पृष्ठों पर ही रह गया है परन्तु भारतीय संस्कृति में नारी-शक्ति का महामहिम गौरव मानव-जाति के लिए आदर्श का प्रतीक है। हमारी संस्कृति की आधार-स्तम्भ है - भारतीय नारियां। नारी ने ही अपने प्राणों की ऊर्जा से हिन्दू संस्कृति के लोक पावन प्रवाह को अमर और अक्षुण्ण रखा है। भारतीय संस्कृति के पौधों को नारी ने अपने प्राणों के रस से सींचा और समय आने पर अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया। यही कारण है कि प्रातःकाल गीता गंगा और गायत्री के साथ-साथ सीता और सावित्री के नाम का भी स्मरण किया जाता है।

माता एक ऐसी शक्ति है जो अपने सभी कष्टों को भूलकर अपनी संतान के कष्टों की मुक्ति के लिए अपना जीवन तक न्योछावर कर देती है। माता की शिक्षा आजन्म बच्चे के पास रहती है। माता में ही ऐसी शक्ति है जो अपने बच्चे के मानवीय ज्ञान के लिए प्रारम्भ से ही अज्ञान का पटल हटाकर उसकी शक्तियों को प्रकाशोन्मुख करती है।

रानी दुर्गावती, महासती सीता, सती सावित्री, सती अनुसूया, सती दमयन्ती, सती शाण्डिली, पांचाली, झांसी की रानी, अहिल्या बाई, चन्नमा, दुर्गावती, माँ शारदा, पन्नाधाय आदि कई उदाहरण हैं जिनके आदर्श त्याग, प्रेम के कारण भारत का मस्तक ऊँचा हुआ है। कई शक्ति पीठ हैं जो आसुरी शक्तियों पर विजय के प्रतीक हैं। सभी स्त्रियों को देवी मानकर उनका सम्मान करना, काम-क्रोध-मद-मोह रूपी आंतरिक दोषों को छोड़ना शक्ति उपासना के लिए अनिवार्य एवं अति उपयोगी है। साधुओं की रक्षा, दुष्टों का संहार, वेदों का संरक्षण करने के लिए प्रत्येक युग में देवियाँ आगे आई हैं। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''

अर्थात् जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती हैं वहां देवता रमते हैं। ''यत्र नार्यो न पूज्यन्ते श्मशानं तत्र वै गृहम्।'' जहाँ स्त्रियाँ नहीं पूजी जातीं उनका सम्मान नहीं होता वह घर नहीं है श्मशान है। जिस कुल, समाज, देश, राष्ट्र में स्त्री सदाचारिणी है वहाँ अनाचार, व्यभिचार, अधर्म हो ही नहीं सकता। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा, ''एकइ धर्म एक व्रत नेमा, काएँ बचन मन पति पद प्रेमा''। रामचरितमानस में हम यही पढ़ते हैं कि प्रत्येक नारी पतिव्रत धर्म का पालन करती हैं चाहे सीता हो या मंदोदरी।

किसी भी मानव-समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है तथा राष्ट्र-विकास के लिए भी उतना ही महत्व रखती है। नारी को अपनी निजी पहचान बनाने के लिए समाजरूपी युद्ध क्षेत्र में योद्धा बनकर लड़ना है, वहीं दूसरी ओर घर रूपी मंदिर में एक पत्नी और माँ होने के नाते जिम्मेदारियों के साथ स्नेह की गंगा बहानी है। भारतीय संस्कृति की अस्मिता पर दाग नहीं लगे तथा संस्कार व आदर्श का अन्य देश अनुसरण करें यह सब स्त्रियों पर ही निर्भर है। भारतीय नारी के सदाचार की शक्ति हम सती सावित्री के जीवन से देख सकते हैं जिसने यमराज पर विजय प्राप्त की।

नारी की प्रतिभा से आज घर-आंगन ही नहीं अपितु सारा संसार आलोकित हो रहा है। निश्चय ही नारी सभी क्षेत्रों में शिखर पर पहुँचने का सामर्थ्य रखती है। नारी विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से परिवार, समाज एवं राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। ब्रह्मज्ञानी गार्गी, माता मदालसा, रेणुका, मैत्रेयी आदि की तुलना ऋषियों से की जाती है। स्वरसाम्राज्ञी लता मंगेशकर इन्दिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल आदि कई महिलाएँ हैं जिनका राष्ट्र एवं समाज के विकास में योगदान रहा है। कल्पना चावला का वैज्ञानिक अनुसंधान में योगदान रहा। वे सभी चिरस्मरणीय हैं। आज भी कर्त्तव्यपारायण और प्रगतिशील महिलाएँ सफलता के नये मापदंड तय कर रही है।

आज आधुनिकता ने हमारी संस्कृति पर कड़ा प्रहार किया है और एक ऐसी देन दी है जिसने मनुष्य को असभ्य बनाना शुरू कर दिया। क्या था हमारा प्राचीन भारतवर्ष और क्या है अब? इस आधुनिकता के भंवर में फंसकर हम अपनी परम्परा, जीवन मूल्यों को भूल चुके हैं। यहाँ के ऋषि-मुनियों ने आदिकाल से ही विश्व को लोकमंगल का संदेश दिया है। लेकिन आज हम भारतवासी लोक मंगल की भावना भूलकर स्वार्थ सिद्धि में लग चुके हैं। यदि भारतीय नारी अपने अस्तित्व को बचाना चाहती हैं तो पहले उसे अपनी संस्कृति की महत्ता को समझना होगा। यदि राष्ट्र को वास्तव में उन्नति के शिखर पर पहुँचाना है तो परम्पराओं को बचाना होगा, जीवन मूल्यों का पालन करना होगा। गाँधी जी ने कहा था - ''धर्मरहित जीवन सिद्धांतरहित जीवन के समान है तथा सिद्धान्तरहित जीवन पतवाररहित नौका के समान है।''

परिवार द्वारा परिवार की हत्या- भ्रूण हत्या

पिछले दशक में हमारे देश में लड़कियों की संख्या में एक करोड़ सैंतीस लाख की कमी हुई है। सरकार ने अब भ्रूणहत्या पर कानून बनाया है। हम यह नहीं सोचते कि जिस भ्रूण की हत्या कर रहे हैं उसमें सीता, सावित्री, गीता, यशोदा, देवकी, जीजाबाई, अहिल्या, लता मंगेशकर आदि हो सकती हैं।

आज चन्द पैसों के लिए नारियों ने अपनी संस्कृति को भुला दिया है। फैशन शो के नाम पर चमकीले, भड़कीले कपड़ों का प्रयोग अपने आप में हिन्सा को जन्म देता है। साबुन हो या तेल, दवा हो या कार, मकान हों या मोबाइल प्रत्येक वस्तु के विज्ञापन में नारी का ही चित्र विभिन्न मुद्राओं में दिखाई देता है। नारी को भोग्या के रूप में प्रस्तुत कर यौन-अपराधों में वृद्धि हुई है। स्त्रियों में आत्मविश्वास और कर्तव्य का भी विकास हो, इस दृष्टि से राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की गई है। समाज में फैले अंधकार को स्त्री ही सुसंस्कारों से दूर कर सकती है। महिलाएँ इस बात पर गंभीरता से विचार करें कि आज युग में उनकी वास्तविक भूमिका क्या है? यदि मातृशक्ति कल्याणकारी रूप लेकर समाज के सामने खड़ी होती है तो सम्पूर्ण समाज सुखमय बन जायेगा।

भारतीय नारियों को चाहिए कि वे अपने चरित्र को शुद्ध करें। समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मूल है चरित्र। सत्य, विनय, करुणा, क्षमा, स्नेह, सहानुभूति, आत्म निर्भीकता, वीरता, आत्म-त्याग जितने भी मानव-जीवन के आदर्श हैं, सब चरित्र के अंतर्गत आ जाते हैं। वास्तविक सुख, संतोष और आनन्द सदाचार से मिलता है। सदाचार हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार ''सुना स्वर्ग क्या है? सदाचार है, मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।''

भारतीय नारी को अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु निम्न परम्पराओं को अवश्य अपनाना चाहिए। क्योंकि इनका वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है।

1. अपनी मांग में सिन्दूर अवश्य लगाना चाहिए इसका वैज्ञानिक कारण भी है। यह शारीरिक विद्युतीय उर्जा को नियंत्रित करता है तथा गर्भस्थान को दुष्प्रभाव से बचाता है।

2. तुलसी की पूजा तथा उसके पाँच पत्तों का सेवन करना। वैज्ञानिकों के अनुसार तुलसी के पत्तों का सेवन अनेक रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।

3. स्तनपान कराने से माता को मातृत्व व बच्चों को शिशुत्व की पुष्टता मिलती है, दोनों का स्वास्थ्य ठीक रहता है एवं परस्पर प्रीति बढ़ती है। यह बात डॉक्टर भी मानते हैं कि माँ का दूध बच्चे के लिए अमृत है।

4. भोजन शाकाहारी हो। भारतीय परम्परा के अनुसार भोजन प्रतिदिन यज्ञ के उपरान्त प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए। हिन्दूधर्म में गाय को माता कहकर पुकारा है इसलिए सबसे पहले गोग्रास की रोटी निकालनी चाहिए। घर पर आये हुए अतिथि को भोजन कराने के पश्चात् परिवार के बुजुर्गों एवं बच्चों को भोजन करा कर फिर स्वयं भोजन करना चाहिए।

पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने का सूत्र :-

पति-पत्नी को अपने दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे की भावना का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा परस्पर एक दूसरे का पूरा सम्मान करना चाहिए। नारी का आदर्श सेवा और नम्रता है। सास को बहू के साथ बेटी-सा व्यवहार करना चाहिए। बहू की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। घर की शांति के लिए बहू और सास को प्यार से रहना चाहिए। अपने परिवार की आय के अनुसार अपने खर्चों को सीमित करना चाहिए। फैशन का दीवानापन घर को बरबाद कर देता है। दूसरों की देखा-देखी अपनी हैसियत से अधिक कीमती वस्त्रों, जेवर, प्रसाधनों तथा आमोद-प्रमोद पर खर्च नहीं करना चाहिए। यदि पत्नी नौकरी या किसी व्यवसाय में संलग्न है तो पति-पत्नी को आपस में समन्वय की भावना से अपने दाम्पत्य-जीवन को सुखी बनाना चाहिए। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अहं का त्याग कर सहनशीलता व प्रेम के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखना चाहिए।

माता ही प्रथम गुरु है :-

बच्चों को उत्तम संस्कार प्रदान करने में माताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों की शिक्षा के लिए पहला गुरु माता को माना गया है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने पिता से अधिक माता को महत्व दिया है। हम जो प्रार्थना करते हैं, उसमें सबसे पहले माता का ही नाम आता है - ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''। इसी तरह श्रुति ने भी ''मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव'' कहकर माता को ही प्रथम स्थान दिया है। यदि माताएँ संस्कार वाली होंगी तो उनकी संतानें भी संस्कारवान् होंगी। आज आवश्यकता है शिवाजी की माता जीजाबाई एवं शहीद भगत सिंह की माँ विद्यावती के समान माताओं की, जिन्होंने अपने बच्चों को संस्कारित जीवन में ढालकर उन्हें त्याग, शौर्य और बुद्धि में दक्ष बनाया। बुरे मित्रों की बुरी संगति का भी संस्कारों के पनपने पर विशेष प्रभाव पड़ता है। दो तोतों की कहानी प्रसिद्ध है। एक व्यक्ति के पास दो तोते पिंजरे में बंद थे। एक दिन पिंजरा खुला रह गया। एक तोता साधु के आश्रम में चला गया और दूसरा तोता डाकू के यहाँ चला गया। साधुवाला तोता सत्संग के असर से राम-राम कहने लगा और डाकू वाला कुसंगति के असर के कारण मारो-मारो कहने लगा। इसलिए माता-पिता को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके बच्चों का सच्चे अर्थों में मित्र कौन है? साथ ही यह भी निरीक्षण करते रहना चाहिए कि मित्र उनके साथ कोई अनुचित कार्य तो नहीं कर रहा है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपना कुछ समय बच्चों के साथ भी बितायें। उनके स्कूल के कार्य को भी देखें। समय-समय पर विद्यालय या स्कूल में जाकर बालकों की प्रगति के बारे में उनके कक्षाध्यापक से बातचीत करनी चाहिए। बच्चों के आचरण, चाल-चलन, खान-पान, रहन-सहन आदि पर माताओं को विशेष ध्यान रखना चाहिए। आजकल अधिकांश महिलाएं भी नौकरी या अन्य व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहती हैं। जिससे वह अपने बच्चों के आचरण, चाल-चलन के बारे में कुछ भी ध्यान नहीं दे पाती हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को पवित्र संस्कृति से परिचित करवाना होगा, तभी हम अपने अस्तित्व, देश की महत्ता को बचा पायेंगे। अपनी परम्परा से ही हम विकास, समृद्धि की धारणाओं को सफल बना पायेंगे।

महिलाएं प्रगति की ओर अग्रसर होवें, किन्तु अपनी संस्कृति व परम्परा को न भूलें। अपनी नैतिकता को सदा सुरक्षित रखें। आज महिलाएं अर्थ के पीछे दौड़ रही हैं और पुरुष के बराबर उन्नति कर रही हैं। वे चाहे जितनी प्रगति कर लें किन्तु यदि उनका कोई आदर्श नहीं है, जीवन-मूल्य नहीं हैं तो भला ऐसी प्रगति जो हमारी संस्कृति व परम्पराओं की अवहेलना करती हो उसके क्या लाभ? जिस प्रकार ऊँचे से ऊँचा भवन भी मजबूत नींव के बिना नहीं टिक सकता उसी प्रकार जीवन-मूल्यों के बिना जीवन भी आधारहीन है। भारत का आधार ही इसकी संस्कृति है, यदि यही नहीं रही तो बिना आधार के नारी का प्रगतिशील या आधुनिक होना कोई महत्व नहीं रखता। हमारी संस्कृति के मूलभाव में सदाचरण है जिसे नारी अपनाकर ही अपना तथा समाज का कल्याण कर सकती है।

- सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़
(राज.)-305801

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :– 011–42415359, 23274771

19 दिसम्बर, अमर शहीदों के बलिदान पर्व पर

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का युवाओं को आह्वान

स्वयं एक आदर्श मनुष्य बनकर आदर्श समाज एवं आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लें

देश धर्म की सेवा में जिसका जीवन व्यतीत होता है वह धन्य है। जिस देश की स्वतन्त्रता के लिए भारत के अमर सपूतों पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखाँ, ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी जैसे लोगों ने अपना बलिदान देकर क्रान्ति की मशाल को जलाया था। वही देश आज भ्रष्टाचार, पाखण्ड, अन्याय, भ्रूणहत्या, शराबखोरी और पाश्चात्य सभ्यता में सराबोर होकर पतन के रास्ते पर तीव्र गति से बढ़ रहा है। जहाँ कभी दूध, घी की नदियां बहती थीं वहां आज शराब, अण्डे, मांस का बाजार गर्म हो रहा है। चारों ओर अशान्ति के बादल मंडरा रहे हैं। आज हम ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जिसमें हमारी तनिक भी उदासीनता हमारे पतन का कारण बनेगी। 19 दिसम्बर, 1927 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है। 27 वर्ष की उम्र में फाँसी का फंदा चूमने के कुछ दिन पहले पं. राम प्रसाद बिस्मिल गोरखपुर की कालकोठरी में अपनी जिन्दगी की कहानी लिखते हुए कहते हैं -

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर,
हमको भी माँ-बाप ने पाला था दुःख सहकर।
वक्ते रूख़सत उन्हें इतना भी न आया कहकर,
आँख से आँसू जो टपके बहकर
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।

19 दिसम्बर को सारे देश में इन अमर सपूतों का बलिदान दिवस मनाया जायेगा, गोष्ठियाँ होंगी, कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे, नारे लगेंगे और फिर उसी प्रकार जिन्दगी का ढर्रा चल पड़ेगा। क्या देश धर्म पर मर मिटने वालों के लिए इतना कर देना पर्याप्त है? उनके जीवन की यही कीमत देश लगा रहा है, यह अत्यन्त विचारणीय है।

बलिदान दिवस के इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि क्रान्ति की मशाल में अपने खून से रोशनी बनाये रखने वालों में पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्लाखाँ, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, मदन लाल धींगरा, ऊधम सिंह, भगवती चरण बोहरा आदि न जाने कितने युवक भारत देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अपने खून से होली खेल गये और देश को आजादी मिल गई। स्वामी जी ने कहा कि क्या इस आजादी से अमर शहीदों का स्वप्न पूर्ण हो गया। आज चारों तरफ भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, पाखण्ड, नशाखोरी का साम्राज्य व्याप्त हो रहा है। आजादी का मतलब उच्छृंखलता और भ्रष्टाचार नहीं है। यदि ये बुराइयाँ समाज में तीव्र गति से फैल रही हैं तो स्वतन्त्रता की गरिमा और बलिदानियों के बलिदान को हम कलंकित कर रहे हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन में जिन मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए सपूतों ने अपने प्राण न्योछावर किये वे मूल्य आज धराशायी हो रहे हैं और स्वतन्त्रता अपना अर्थ खोती जा रही है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज और आर्य युवाओं को आगे बढ़कर इन जीवन मूल्यों को जीवित रखने के लिए आगे आना होगा। देश आज जिन गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है उसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाज राजनीति को प्रभावित करने के लिए लोकशक्ति को मजबूत करे और राजसत्ता पर अंकुश लगाने का दायित्व निभाये। स्वामी जी ने कहा कि राष्ट्र की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने वाले अमर सपूतों की तरह आर्य राष्ट्र की मशाल को उठाने वाले हाथों की आज महती आवश्यकता है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, नारी उतपीड़न, पाखण्ड आदि बुराइयों ने ऐसी विषमता पैदा कर दी है कि न केवल समाज विभाजित होकर निर्बल होता जा रहा है बल्कि बुराइयाँ घुन बनकर व्यक्ति व परिवार की गरिमा का क्षरण कर रही है और प्रशासन की नींव खोखली कर रही है। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जागरूक व सक्रिय रहते हुए सरकार व प्रशासन पर दबाव बनाना होगा। जन भावनाओं से खिलवाड़ करने की छूट किसी को भी नहीं दी जा सकती। स्वामी जी ने ब्रह्मचर्य, योग साधना, स्वाध्याय, सत्संग और समाज सेवा अपनाने पर बल देते हुए युवाओं का आह्वान किया कि युवा ही भविष्य की आशा होते हैं, अतः उनका संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। पं. रामप्रसाद बिस्मिल बाल्यकाल में अत्यन्त उच्छृंखल थे लेकिन आर्य समाज शाहजहाँपुर के सान्निध्य में आकर उनका जीवन बदल गया और देश धर्म की बलिवेदी पर उन्होंने अपना जीवन अर्पण कर दिया। चरित्र की उज्ज्वलता से ही व्यक्ति प्रकाशवान होता है। स्वामी जी ने युवकों का आह्वान करते हुए कहा कि सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक पाखण्डों के विरूद्ध जबरदस्त मोर्चा लेकर समाज व राष्ट्र का कायाकल्प किया जा सकता है तो आइये अपने इन अमर शहीदों के बलिदान दिवस पर देश को भ्रष्टाचार तथा अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों से मुक्त कराने तथा कन्या भ्रूण हत्या, अपसंस्कृति, दहेज प्रथा, जातिवाद जैसी कुरीतियों को समाज से जड़मूल से उखाड़ फेकने का संकल्प लें। अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने और स्मरण करने का इससे अच्छा और कोई तरीका नहीं हो सकता।

देश को आजाद हुए 75 वर्ष बीत चुके हैं, पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, परन्तु सरकारें शहीदों के सपनों को अपनाने में जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखा रही हैं। आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज से प्रेरित क्रांतिकारियों का नाम तक लेना उचित नहीं समझ रही हैं। इसलिए आर्य समाज के नवजवानों को आगे आकर अपने क्रांतिकारियों द्वारा किये गये कार्यों को स्वयं देश एवं समाज के सामने प्रस्तुत करना होगा। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से प्रेरित होकर राम प्रसाद बिस्मिल जैसे अनेक क्रांतिकारियों ने देश की आजादी में अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, परन्तु आज राजनीतिक दल केवल अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लगे हुए हैं। येन-केन-प्रकारेण सत्ता की चाबी कैसे हाथ में रहे उसी के लिए कार्य करने में जुटे हुए हैं। आजादी के दिवानों का सपना था कि पूरे देश में समानता का अवसर प्रदान किया जाये, सभी को समान शिक्षा, समान सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए। जब सभी पढ़ेंगे, बढ़ेंगे तभी राष्ट्र मजबूत होगा। शहीदों के सपनों को पूर्ण करने के लिए आर्य समाज के नौजवानों को एकजुट होकर स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपयें में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
'दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष :- 011-42415359, 23274771

कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर
स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी के हुए ओजस्वी व्याख्यान
गुरुकुल प्रबन्ध समिति की ओर से स्वामी द्वय का किया गया भव्य स्वागत

आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी त्यागी, तपस्वी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुल नरेला एक ऐसी संस्था है जिसमें अपने जीवन को तपाकर अष्टाध्यायी महाभाष्य एवं वैदिक वाङ्मय का गहन अध्ययन करके हजारों स्नातिकाएँ निकलीं और उनमें से कई बहनों ने कन्या गुरुकुलों की स्थापना करके उन गुरुकुलों के माध्यम से हजारों लड़कियों को पढ़ा–लिखा कर शिक्षित एवं संस्कारित किया। ऐसे सभी कन्या गुरुकुलों के केन्द्र बिन्दु रहे कन्या गुरुकुल नरेला के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 13 नवम्बर, 2022 को आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी तथा युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से गुरुकुल में पधारे, उनके अतिरिक्त हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री यादव जी तथा हरियाणा संस्कृत अकादमी के निदेशक डॉ. दिनेश चन्द्र शास्त्री भी विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में मंच का संचालन श्री रामपाल आर्य ने संभाला और इसकी अध्यक्षता श्री रणवीर सिंह खत्री ने की।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए आचार्य यशवीर जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्राचीन संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान ने कन्या गुरुकुल नरेला को एक ऐतिहासिक गुरुकुल बताते हुए कहा कि यह गुरुकुल पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज की कर्मस्थली रहा है और यहां से अनेक विदुषियाँ स्नातक बनकर निकली हैं जो विभिन्न स्थानों पर अपने कार्यों से गुरुकुल का नाम रोशन कर रही हैं।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में लॉर्ड मैकाले की शिक्षा के विकल्प के रूप में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को स्थापित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों की स्थापना आधुनिककाल में स्वामी दयानन्द जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने की। उस समय लॉर्ड मैकाले की शिक्षा इतनी अधिक प्रभावी नहीं थी किन्तु देश आजाद होने के बाद लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी होती चली गई और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को लोगों ने तिलांजलि दे दी। उसका परिणाम आज हम सभी लोग देख रहे हैं। आज युवा वर्ग संस्कारिविहीन होने के कारण अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता के शिकार हो रहे हैं। न उन्हें अपने माता–पिता के प्रति कर्त्तव्य बोध है और न ही राष्ट्र और समाज के प्रति। वे खाओ, पिओ, मौज करो। अर्थात् भोगवादी संस्कृति के अनुयायी बने हुए हैं। इसमें उन युवाओं की गलती नहीं है बल्कि गलती मैकाले की शिक्षा को लागू करने वाले शासकों की है या उनके माता–पिता की जिन्होंने सही समय पर उन्हें संस्कार देने का कार्य नहीं किया। आज के विद्यालयों में बच्चों को विषय वस्तु पढ़ाने के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के संस्कार नहीं दिये जाते। उन्हें पैसा कमाने की मशीन बनाने पर पूरी शक्ति लग रही है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि भारत के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति को व्यापक रूप से लागू किया जाये। गुरुकुलों में नैतिक शिक्षा, संस्कार, धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता आदि के अतिरिक्त समस्त अन्य विषय और भाषाएँ पढ़ाने की व्यवस्था हो। इससे बच्चों का स्थाई निर्माण होगा। जब बच्चे आवासीय व्यवस्था में अनुशासित रहेंगे और बाहर के दूषित वातावरण से उन्हें वंचित रखा जायेगा तो उनमें स्वतः अच्छे विचार और संस्कार उत्पन्न होंगे और वे जीवन में कभी भी भटकाव की ओर नहीं जायेंगे। विषय की दृष्टि से उन्हें जहां संस्कृत, राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मातृभाषा में विशेष पारंगत किया जाये वहीं अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं का भी ज्ञान उन्हें विशेष रूप से कराया जाये। गणित, विज्ञान, इतिहास एवं आधुनिक तकनीक कम्प्यूटर आदि के विषय भी उन्हें अच्छी प्रकार से पढ़ाये जायें। संस्कृत भाषा में पारंगत करने के लिए उन्हें अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि व्याकरण को अच्छे ढंग से पढ़ाया जाये इससे उनका सर्वांगीण विकास होगा और लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को पछाड़कर देश में एक वैदिक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली होगी। इसके लिए केवल इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। यह इच्छा शक्ति केवल समाज में ही नहीं बल्कि सरकार में भी होनी चाहिए क्योंकि सारी शक्ति सरकार के पास है। आज हम सब सरकार के ऊपर दबाव बनायें कि पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लागू की जाये गुरुकुलों में जाति, पांति, मजहब, सम्प्रदाय, गरीब–अमीर आदि किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता वहां सबको समान शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा और जीवनोपयोगी शिक्षा दी जाती है।

स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए उपस्थित जनसमूह से अपील की कि कन्या गुरुकुल नरेला को एक बार फिर से हमलोग मिलकर वही गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करें जो कभी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज के समय में इसे प्राप्त था। स्वामी ओमानन्द जी आर्य समाज के एक इतिहास पुरुष थे। उन्होंने कन्या गुरुकुल नरेला और गुरुकुल झज्जर दो ऐसे आर्ष शिक्षा के केन्द्र स्थापित किये थे जिनसे हजारों स्नातक व स्नातिकाएं निकलें और आर्ष शिक्षा के मजबूत प्रहरी बनें। स्वामी ओमानन्द जी ने अपनी पैतृक जमीन कन्या गुरुकुल को दान देकर एक महान त्याग का परिचय दिया था। ऐसे महान संन्यासी को आज इस गुरुकुल में पधारने पर मैं हृदय से स्मरण करता हूँ और उनके जीवन से हम सभी लोग प्रेरणा लेकर गुरुकुल शिक्षा के सहयोगी बन सकेंगे ऐसी आशा रखता हूँ। स्वामी जी ने गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री सोमवीर शास्त्री जो एक उत्साही नवयुवक हैं और बहुत कुशलता के साथ गुरुकुल का संचालन कर रहे हैं, उनके कार्य की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। श्री सोमवीर शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती सविता आर्या जो कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका के रूप में कार्य कर रही हैं उनकी निष्ठा एवं कर्मठता तथा परिश्रम को देखकर स्वामी जी ने कहा कि ऐसी विदुषी बहनों को हमें हर प्रकार का सहयोग देना चाहिए। उनका कार्य केवल गुरुकुल के अन्दर की व्यवस्था को संभालना रहे। आर्थिक संसाधन जुटाने का कार्य हम सब लोग मिलकर करें। ताकि ये हमारा गुरुकुल निरन्तर उन्नति करता चला जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा नारी जाति के उत्थान के लिए किये गये कार्यों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं की सबसे अधिक वकालत की और उनकी शिक्षा का रास्ता खोला। स्वामी जी के समय में स्त्री शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। उस समय प्रायः लोग कहते थे कि – स्त्री शूद्रो न धीयताम्। किन्तु स्वामी दयानन्द जी ने इसका डटकर विरोध किया और उन्होंने स्त्री शिक्षा का मजबूती के साथ समर्थन किया। आज स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में सर्वश्री देवी सिंह मान प्रधान गुरुकुल, श्री राजपाल आर्य, श्री राजेन्द्र मलिक, आचार्य विश्वपाल जी, श्री राजसिंह मलिक, श्री हरिश्चन्द्र जी, आचार्य चन्द्रदेव जी व श्री सोमदेव शास्त्री जी आदि गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी को शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष व हरियाणा संस्कृति अकादमी के निदेशक डॉ. दिनेश चन्द्र शास्त्री को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने विविध व्यायाम आदि के प्रदर्शन भी दिखाये। कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा दिनांक 11 व 12 मार्च, 2023 की तिथियों में वेद संगोष्ठी (वेदों में राष्ट्रवाद) का भव्य आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 11 व 12 मार्च (शनिवार एवं रविवार), 2023 को पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़–312001 (राजस्थान) में स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज (दिल्ली) की अध्यक्षता में वेदों में राष्ट्रवाद विषय पर वेद संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें प्रत्येक देशवासी का अपने राष्ट्र के प्रति क्या कर्त्तव्य है, वेदों में क्या उपदेश इस विषय में दिया है। महर्षि दयानन्द ने वेदों की ओर संसार का ध्यान आकृष्ट किया। विगत दो सौ वर्षों में वेदों पर विस्तृत कार्य हुआ है। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का राष्ट्रीय आन्दोलन में कितना योगदान रहा है, जिसकी चर्चा आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में होनी चाहिए, इसी दृष्टि से इस संगोष्ठी का आयोजन किया है। जिसमें देश के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान भाग लेंगे और हम सब उनके शोध विषयक विचारों से लाभान्वित होंगे।

सम्मानीय वैदिक विद्वानों से नम्रता पूर्वक निवेदन है कि 4–5 पृष्ठों में अपने शोध लेख को 20 फरवरी 2023 तक भेजने की कृपा करें जिससे आपके शोध लेख को प्रकाशित किया जा सके।

नोट :– शोध लेख डॉ. सोमदेव शास्त्री, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़–312001 (राजस्थान) के पते पर भेजने की कृपा करें।

– डॉ. सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई, मो.:–9869668130, संदीप आर्य मंत्री, मो.:–9969037837

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक के तत्वावधान में तीसरा पारिवारिक सत्संग सफलता के साथ हुआ सम्पन्न

श्री ईश्वर सिंह आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा आर्या ने सत्संग का दायित्व निष्ठा के साथ निभाया

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी भी सत्संग में हुए सम्मिलित

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक के तत्वावधान में ग्राम–टिटौली में प्रारम्भ किये गये पारिवारिक सत्संग का कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ चल रहा है। इस क्रम में तीसरा पारिवारिक सत्संग 8 दिसम्बर, 2022 को श्री ईश्वर सिंह आर्य एवं श्रीमती सुमित्रा आर्या के निमंत्रण पर उनके प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से उनके निवास पर आयोजित किया गया। संयोग की बात यह रही कि श्री ईश्वर सिंह आर्य की सुपौत्री कु. अंशिका आर्या का जन्मदिवस भी इस अवसर पर धूमधाम से मनाया गया।

सत्संग में जोधपुर से लौटने के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी भी सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी मुक्तिवेश जी एवं बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। गांव की सैकड़ों महिलाओं तथा पुरुषों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसे दोनों बहनों से सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् कु. अंशिका आर्या तथा यजमान परिवार को स्वामी आर्यवेश जी ने आशीर्वाद प्रदान किया और उनके उत्तम स्वास्थ्य दीर्घायुष्य, सुख–समृति तथा यश–कीर्ति की ईश्वर से प्रार्थना की। यज्ञ के उपरान्त कार्यक्रम विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ जिसमें स्वामी मुक्तिवेश के सुन्दर भजनों का तथा बहन पूनम आर्या और स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों का कार्यक्रम चला।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने अंशिका आर्या के जन्मदिन को इतने उत्साह और विशेष तैयारी के साथ मनाने के लिए श्री ईश्वर सिंह आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा आर्या तथा पूरे परिवार को बधाई और और उन्होंने कहा कि प्रायः देखने में आता है कि लोगो लड़कियों के जन्मदिन आदि नहीं मनाते किन्तु आज इस परिवार ने इस छोटी बच्ची का जन्मदिन मनाकर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। सभी को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने घरों में बेटों के साथ बेटियों के जन्मदिन आदि विशेष तैयारी के साथ मनाने चाहिए। आज विशेष रूप से महिलाओं में एक अन्धी मानसिकता घर कर गई है कि वंश चलाने के लिए बेटा चाहिए। किन्तु उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि वंश चलाने के लिए बेटा ही काफी नहीं है, बेटियाँ भी अपने माता–पिता के नाम को पूरी दुनिया में रोशन कर सकती हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि श्रीमती इंदिरा गांधी अपने पिता की इकलौती बेटी थीं। किन्तु उन्होंने पूरी दुनिया में अपने पिता जवाहर लाल नेहरू को इस बात के लिए जना दिया कि नेहरू जी की बेटी इतने बड़े देश की प्रधानमंत्री बनकर उसे कुशलता से संभाल सकती हैं। अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनसे हमें यह मालूम पड़ता है कि बेटे हों या बेटी यदि वे योग्य होंगे, संस्कारी होंगे तो वे अपने वंश को भी चलायेंगे और अपने खानदान का नाम रोशन करेंगे। किन्तु वंश के इस अनावश्यक व्यामोह के कारण जो लोग बेटे की इच्छा से बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही माँ के गर्भ में मरवा देते हैं वे ईश्वर के नियम का तो उल्लंघन करते ही हैं साथ ही बहुत बड़ा पाप करते हैं। इसलिए हमें अपने बेटियों को बेटे के बराबर का लालन–पालन, पढ़ाई और आगे बढ़ने के सभी अवसर देने चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने महिलाओं को समाज के निर्माण में उत्तरदाई बताया। क्योंकि माता निर्माता भवति। माँ निर्माण करने वाली होती है और यदि हम माताओं को अर्थात् नारी जाति को शिक्षित व संस्कारित बनायेंगे तो उनके द्वारा योग्य एवं संस्कारी संतान समाज व राष्ट्र को प्राप्त होगी। इसलिए यदि महिलाएँ चाहें तो इस राष्ट्र में त्यागी, तपस्वी विद्वान् पैदा कर सकती हैं और यदि वे स्वयं ही अज्ञान से ग्रसित रहेंगी तो वे इस पृथ्वी पर भार बढ़ाने के सिवाय और कुछ भी नहीं कर पायेंगी। स्वामी आर्यवेश जी ने धर्म के क्षेत्र में समाज में चल रहे पाखण्ड पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये और उन्होंने कहा कि आज मूर्ति पूजा के नाम पर जो अन्धविश्वास चल रहा है यह भविष्य में भारत के पतन का कारण बनेगा। एक निराकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर के बदले पत्थर की मूर्तियों को भगवान मानना उनसे मनौतियां मांगना, उनके ऊपर चांदी और सोने के थाल में केसरयुक्त लड्डू और विभिन्न प्रसाद चढ़ाना कोरा अन्धविश्वास एवं पाखण्ड है। पत्थर की मूर्ति न खा सकती है, न बोल सकती है, न सुन सकती है, बल्कि उसकी पूजा करते–करते लोग स्वयं जड़ बुद्धि और रुढ़िवादी बन जाते हैं। इसलिए आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने की महती आवश्यकता है। आर्य समाज एक ईश्वर और वह निराकार सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तरयामी, सर्वव्यापक आदि विशेषणों से युक्त है। वह मनुष्य के रूप में कभी जन्म नहीं लेता, उसकी मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। आश्चर्य की बात है कि भगवान के नाम पर मंदिरों में विभिन्न महापुरुषों या काल्पनिक देवी–देवताओं की मूर्तियाँ रखकर उन्हें बेसकीमती पोशाकें पहनाकर और मंदिर में सजाकर आंख के अंधे और गांठ के पूरे लोग उनकी अन्धभक्ति करते हैं, पूजा का ढोंग रचते हैं, उन्हें भोग लगाते हैं, यह सब कुद वाह्य आडम्बर पाखण्ड से ओत–प्रोत, अन्धविश्वास से ग्रसित कार्य के शिवाय और कुछ भी नहीं है। यह अवैज्ञानिक भी है, यह सृष्टि नियम के विपरीत, वेद विरुद्ध तथा तर्क से विपरीत है। अतः मूर्ति पूजा छोड़कर निराकार ईश्वर की उपासना, उसके गुणों का चिन्तन, उसके प्रति समर्पण और उसको हर समय हाजिर–नाजिर समझते हुए यदि हम अपने कार्य करेंगे तो हम अपने जीवन के परम लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेंगे। स्वामी जी ने उपस्थित सभी सत्संग प्रेमी स्त्री–पुरुषों से निवेदन किया कि इन सत्संग के माध्यम से अन्धविश्वास और पाखण्ड के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जाये। कोशिश करें कि अधिक से अधिक से परिवारों में सत्संग हो। घरों में लोग यज्ञ करवाना शुरू करें, बच्चों के या बड़ों लोगों के जन्मदिन केक काटकर नहीं बल्कि घर में यज्ञ और विद्वानों के उपदेश आदि से मनाये जायें।

कार्यक्रम के उपरान्त सभी उपस्थित लोगों को परिवार की ओर से प्रसाद वितरित किया गया और आश्रम से पधारे सभी विद्वानों का धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य साधिका मण्डल, ग्राम–टिटौली की संयोजिका बहन पूनम आर्या तथा उनकी सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

स्व. पहलवान प्रेमदेव आर्य की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके ग्राम–खुडन, जिला–झज्जर में यज्ञशाला का उद्घाटन

यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी एवं गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी ने किया

इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ भी किया गया

आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता स्व. श्री प्रेमदेव आर्य पहलवान की प्रथम पुण्यतिथि 8 दिसम्बर, 2022 को उनके पैतृक गांव खुडन में उनके सुयोग्य सुपुत्रों सर्वश्री सन्त आर्य, जसवन्त आर्य एवं बसन्त आर्य ने अपने निवास पर अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में यज्ञशाला का निर्माण कर उद्घाटन समारोह एवं प्रेरणा सभा का आयोजन किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी, गोसेवक जीवानन्द नैष्ठिक जी, गुरुकुल दादरी के संचालक स्वामी सच्चिदानन्द जी, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी जी आदि कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। प्रातः कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसका पौरोहित्य श्री जीवानन्द नैष्ठिक ने किया और चतुर्वेद शतकम् के रूप में यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री सन्त आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी रहे। उनके अतिरिक्त सैकड़ों गणमान्य लोगों ने भी यज्ञ में अपनी आहुतियाँ देकर स्व. पहलवान प्रेमदेव जी को अपनी श्रद्धांजलि दी। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी तथा आचार्य विजयपाल जी ने यज्ञशाला का विधिवत उद्घाटन किया। कार्यक्रम का संयोजन ब्र. चन्द्रदेव आर्य ने किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि हम अपने सिद्धान्तों की रक्षा करने के लिए वेद विरुद्ध कार्यों से कोई समझौता न करें। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवन में कभी भी वेद विरुद्ध मान्यताओं से समझौता नहीं किया वे सत्य के लिए सदैव संघर्ष करते रहे। बड़े से बड़े प्रलोभन उन्हें देने की कोशिश की गई किन्तु वे कभी नहीं झुके। ऐसे सत्य के आग्रही और वेदों के प्रखर प्रवक्ता महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को कभी भी सिद्धान्त विरुद्ध मान्यताओं का समर्थन या अनुमोदन नहीं करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. पहलवान प्रेमदेव आर्य जी को भी स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने अपने कई ऐसे शिष्य तैयार किये जिन्होंने कुश्ती के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पर उपलब्धियाँ प्राप्त की। प्रेमदेव जी आर्य समाज के एक कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ता थे। वे नवयुवकों को ब्रह्मचर्य, व्यायाम तथा सदाचार की प्रेरणा देते रहते थे। जिसके परिणामस्वरूप इस गांव से बहुत अच्छे–अच्छे पहलवान और खिलाड़ी देश को मिले। ऐसे व्यक्तित्व से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री प्रेमदेव आर्य ने अपने तीनों सुपुत्रों को भी संस्कारित किया और आर्य समाज की विचारधारा से ओत–प्रोत कर उन्हें पक्का आर्य बनाया। उसी का परिणाम है कि आज उनके तीनों पुत्र मिलकर उनकी स्मृति में इतना शानदार आयोजन और यज्ञशाला आदि का निर्माण कर रहे हैं। इस अवसर पर अन्य विद्वानों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा और लोगों ने स्वामी जी से मांग की कि इस इलाके को आप संभालें और बढ़ती हुई नशाखोरी, उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता तथा युवकों के चारित्रिक पतन से समाज गर्त में जा रहा है। उसे समय रहते संभालने की आवश्यकता है। अतः आप समय–समय पर इस इलाके में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करके लोगों को जागृत करते रहें।

देशी गाय के लाभ

– श्री रोशनलाल जी पाल

जननी ***जनकर दूध पिलाती, केवल साल छमाही भर।***
गोमाता पय सुधा पिलाती, रक्षा करती जीवन भर॥

अभी कुछ समय पहले एक पुस्तक अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित हुई थी, The Cow is a wonderful laboratary (गाय एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है)। इस पुस्तक में भी सिद्ध किया गया है कि प्रकृति ने समस्त जीव-जन्तुओं और सभी दुग्धारी पशुओं में से केवल गाय ही एक ऐसी पैदा की है, जिसे लगभग 180 फुट (2160 इंच) लम्बी आंत दी है। अन्य पशुओं या जीवधारियों में यह विशेषता नहीं है। यही कारण है कि गाय जो कुछ भी खाती या पीती है, वह इस लम्बी आंत से होकर अंतिम छोर तक जाता है।

जैसे दूध से मक्खन निकालने वाली मशीन में जितनी अधिक गरारियां लगाई जाती हैं, उससे उतना ही अधिक एवं शुद्ध फैट का मक्खन निकलता है, वैसे ही प्रकृति ने भी गाय की शारीरिक संरचना में सबसे लम्बी आंत दी है, जिससे उसका दूध अन्य दूध देने वाले पशुओं से अधिक श्रेष्ठ होता है। संक्षेप में गोवंश की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

गोवत्स - गाय प्रजनन (बच्चा जनने) के बाद 18 घण्टे तक उसके साथ रहे और उसे चाटती रहे तो वह उस बच्चे (बछड़ा-बछड़ी) को जिन्दगीभर भूलती नहीं है। इसी प्रकार गोवत्स भी सैकड़ों गायों के बीच में से अपनी माता को ढूंढकर दुग्धपान करता है, जब कि भैंस का बच्चा अपनी माँ को ढूँढ़ नहीं पाता।

खीस - प्रजनन के तुरंत बाद गाय के स्तनों से जो दूध निकलता है, उसे खीस, चीका, कीला या पेवस कहते हैं। देखने में यह दूध के समान ही होता है, परन्तु संरचना तथा गुणों में बिलकुल भिन्न होता है। सामान्य रूप से गरम करने पर तुरंत फट जाता है। इसीलिए इसे मिल्क केक बनाने की प्रक्रिया द्वारा पकाकर उपयोग में लेते हैं। प्रजनन के बाद 15 दिनों तक इसमे दूध की अपेक्षा प्रोटीन तथा खनिज तत्वों की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा लेक्टोज, वसा एवं पानी की मात्रा कम होती है। खीस में दूध की अपेक्षा केसीन और एलब्यूमिन की मात्रा दोगुनी, ग्लोब्यूलिन की मात्रा 12 से 15 गुनी तथा एल्यूमिनियम की मात्रा 6 गुनी अधिक होती है। सामान्य दूध की अपेक्षा खीस में खनिजतत्व भी अधिक होते हैं।

सींग - गाय की सींगों का आकार सामान्यत: पिरामिड जैसा होता है। वह एक शक्तिशाली एन्टीना के रूप में है। सींगों की मदद से गाय आकाशीय सभी ऊर्जाओं को शरीर में संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गोमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा मिलती है। आकाशीय ऊर्जा (कोस्मिक एनर्जी) को

संग्रह करने का कार्य गाय के सींग करते हैं। इसके अलावा गाय की पीठ पर ककुद (ढिल्ला) होता है जो कि सूर्य की ऊर्जा और कई आकाशीय तत्त्वों को शरीर में ग्रहण कर गोमूत्र, दूध तथा गोबर द्वारा हमें मिलता है।

गाय का दूध - यह पौष्टिक तत्त्वों का भण्डार है। इसमें जल 87, वसा 4, प्रोटीन 4, शर्करा 5 तथा अन्य तत्त्व 1 से 2 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। गाय के दूध में 8 प्रकार के प्रोटीन्स, 11 प्रकार के विटामिन्स, 12 प्रकार के पिगमेंट्स तथा तीन प्रकार की दुग्ध गैसें पायी जाती हैं।

गाय के दूध में केरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। भैंस का दूध गरम करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं, जबकि गाय के दूध को गरम करने पर भी पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं।

गाय का मूत्र - गोमूत्र को आयुर्वेद में बड़ा ही उपयोगी बताया गया है। कुशल वैद्य अपनी आयुर्वेदिक दवाएं (गोलियां) बनाने में जल के स्थान पर गोमूत्र का ही प्रयोग करते हैं। गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड होता है, जो कीटाणुनाशक है और शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है, इसी कारण प्राचीन ग्रन्थों में इसे सबसे अधिक पवित्र कहा गया है। गंगाजल के समान इसे अधिक समय तक रखे जाने पर भी खराब नहीं होता। इसके अलावा गोमूत्र एवं गोदुग्ध में भी स्वर्णक्षार मौजूद रहता है, जो अति उपयोगी रसायन है।

अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों तथा आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम, सोडियम और लेक्टोज होता है। इसके अलावा इसमें सल्फर, अमोनिया, लवणसहित विटामिन एबीसीडीई, एन्जाइम आदि तत्त्व भी हैं। ये तत्त्व ही विभिन्न रोगों में अनुपान भेद एवं मात्रा भेद के साथ प्रयुक्त होकर व्यक्तियों को बचाते हैं।

देशी गाय के गोबर-मूत्र-मिश्रण से प्रोपीलीन आक्साईड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है। गोमूत्र में कुल 16 प्रकार के मुख्य खनिज तत्व होते हैं, जो शरीर के रक्षण, पोषण और विकास में सहायक हैं। इसके समुचित सेवन से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और शरीर शक्तिशाली एवं चेतनायुक्त होता है। अनेक शोधों एवं परीक्षणों में इसमें सूक्ष्म रूप से चांदी तत्त्व भी पाया गया है, जो स्वास्थ्य रक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

गाय का शरीर - गाय के शरीर के रोम-रोम से गुग्गुल जैसी पवित्र सुगन्ध आती है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की वायु निकलती है, जो वातावरण को जन्तुरहित करके पवित्र बनाती है। गाय को रीठे के जल से नहलाने से उसको और अधिक आनन्द का अनुभव होता है। गाय के इन्हीं गुणों को देखकर कहा जाता है -

जा घर होय तुलसी अरु गाय।
ता घर वैद्य कबहुँ ना जाय॥

- गोग्रास से साभार

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज पाबूपुरा, जोधपुर के 48वें स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रकथा एवं मातृ शक्ति जागरण महोत्सव का भव्य आयोजन

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी द्वारा नारी जाति के सम्मान और राष्ट्र के उत्थान में किये गये योगदान पर विस्तार से विचार प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने कहा कि नारी सम्मान तथा राष्ट्र उत्थान एक दूसरे के पूरक हैं। यदि नारियों का सम्मान बढ़ेगा तो राष्ट्र का उत्थान भी सम्भव होगा। वेदों में नारी जाति के सम्बन्ध में अनेक मन्त्रों के माध्यम से कहा गया है कि उन्हें समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्रदान करने के लिए तथा आगे बढ़ने के लिए पूरे अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। नारियाँ किसी भी राष्ट्र की आधार होती हैं। नारी जाति के बिना सृष्टि की संरचना नहीं हो सकती। इसलिए नारियाँ सृजनकर्ता होती हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने माता को बच्चे का पहला गुरु बताया है और कहा है कि –मातृमान, पितृवान, आचार्यवान, पुरुषोवेद। इसी प्रकार – माता निर्माता भवति। के द्वारा माता को निर्माण करने वाली कहा गया है। अतः नारी जाति का सम्मान, उसकी सुरक्षा, शिक्षा–दीक्षा, प्रतिष्ठा तथा समाज में ऊँचे पदों पर कार्य करने के अवसर पुरुषों के समान मिलने चाहिए। जिस राष्ट्र में नारियाँ शिक्षित होंगी, धार्मिक होंगी उस राष्ट्र में संस्कारवान सन्तानें राष्ट्र के गौरव को बढ़ायेंगे। राष्ट्र के उत्थान में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में समानता लाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा में समानता लाने की बात कही है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि यह जाति नियम और राज नियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये। उन्होंने आगे कहा कि चाहे कोई राजकुमार हो या राजकुमारी या दरिद्र की सन्तान हो, सबको तुल्य खान–पान, वस्त्र तथा आसन मिलने चाहिए। अर्थात् राष्ट्र में अनिवार्य शिक्षा, निःशुल्क शिक्षा तथा समान शिक्षा की व्यवस्था यदि हो जाये तो समस्त भेदभाव, छूतछात तथा ऊँच–नीच की मानसिकता समाप्त हो सकती है। बहुत सारी समस्याओं का स्वयं समाधान निकल सकता है। जब शिक्षा निःशुल्क होगी और समान होगी तो हर व्यक्ति बच्चों की पढ़ाई के खर्च से मुक्त हो जायेगा तो वह गलत तरीके से धन कमाने की कोशिश नहीं करेगा। यदि यूँ कहा जाये कि प्रत्येक व्यक्ति की चिन्ताओं का राष्ट्रीयकरण हो जाये तो राष्ट्र उन्नति के शिखर पर जा सकता है। स्वामी जी ने वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशताब्दी के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पूरे आर्य जगत को अपना लेखा–जोखा प्रस्तुत करना होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को हम कितना क्रियान्वित कर पाये। अतः हमें अभी से लक्ष्य बनाकर इसकी तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। संयोग की बात है कि 2024 में आर्य समाज पाबूपुरा की स्थापना के 50 वर्ष पूरे हो जायेंगे। अतः आर्य समाज पाबूपुरा के सभी कार्यकर्ताओं को भी दो वर्ष का ठोस कार्यक्रम बनाकर कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए। इसके लिए आर्य वीरदल, स्त्री आर्य समाज के माध्यम से साहित्य वितरण तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाने एवं आम आदमी की समस्याओं के समाधान के लिए रचनात्मक कार्यक्रम बनाकर उसे क्रियान्वित करने योजना तैयार करनी चाहिए।

आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता एवं आर्य वीरदल के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवर लाल आर्य ने स्वामी जी तथा अन्य सभी विद्वानों का आर्य समाज के कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के पधान श्री गुलाब चन्द आर्य ने किया तथा सभी पदाधिकारियों एवं आर्य वीरों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। महोत्सव में मंच का संचालन श्री ओम जी आचार्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से सभी विद्वानों तथा सहयोगियों का शॉल, स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में जिन कार्यकर्ताओं ने विशेष योगदान दिया उनमें श्री भंवर लाल हठवाल, श्री भंवर लाल आर्य, श्री गुलाबचन्द आर्य प्रधान आर्य समाज, श्री अरूण आर्य उपप्रधान, श्री रितेश आर्य मंत्री, श्री अंकित आर्य उपमंत्री, श्री विनोद आर्य कोषाध्यक्ष, श्री जयनारायण आर्य पुरोहित, श्री रोशन लाल आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती संजना देवी, उपप्रधाना श्रीमती सरोज देवी, मंत्राणी श्रीमती प्रेमलता आर्या, कोषाध्यक्षा श्रीमती सुषमा आर्या तथा आर्य वीरदल अर्जुन शाखा, पाबूपुरा के संचालक श्री अविनाश आर्य, शाखा नायक श्री सुनील आर्य, उपशाखा नायक श्री विजय आर्य आदि ने विशेष योगदान दिया। इस कार्यक्रम में जालौर से श्री दलपत सिंह आर्य सपरिवार पधारे तथा पाली से भी आर्य वीर तथा आर्य वीरांगनाएँ दल–बल के साथ सम्मिलित हुए। जोधपुर के प्रमुख कार्यकताओं में सर्वश्री हरि सिंह आर्य अध्यक्ष आर्य वीरदल, श्री मदन जी आर्य, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री गजे सिंह आर्य, श्री चैनाराम, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य महामंत्री आर्य वीरदल राजस्थान आदि प्रमुख साथी भी सम्मिलित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य ने भी अपने ओजस्वी उद्‌गार कार्यक्रम में प्रस्तुत किये। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

मलेरिया ज्वर से कैसे बचें

– डॉ. अंजू चक्रवर्ती

परिचय : खून में उत्पन्न हुए विष को बुखार रूपी आग द्वारा सफलता से जलाना प्रकृति का एक सुलभ प्रयास है। दूसरे शब्दों में जो यह मान्यता है कि कीटाणुओं से ही विभिन्न रोग पैदा होते हैं तो बुखार रूपी अग्नि उनको भी जलाने वाली है। बुखार के समय प्रकृति शरीर को साफ करने के लिए किस तरह तेजी से झाड़ू साफ करना चाहती है, ठीक उसी समय जी मिचलाता है मानो वमन होना चाहती है, सांस में भी बदबू आने लगती है उधर नाक से जो सांस रोगी छोड़ता है उससे भी बदबू आ रही है। उस समय हृदय शरीर के भीतर जमे हुए विष को खून के माध्यम से शुद्ध करने के लिए फेफड़ों को दे रहा है। फेफड़ों में बड़ी तेजी से रक्त शोधन की प्रक्रिया चल रही होती हैं श्वांस की गंदगी उसे प्रकट कर रही होती है कि फेफड़ों में किस प्रकार तेजी से सफाई का काम हो रहा है। परिणामस्वरूप दिल की धड़कन बढ़ जाती है हृदय की इस परेशानी को हाथ की नाड़ी अपनी तेज चाल से प्रकट कर रही होती है। दूसरी ओर पेशाब गंदला और बदबूदार होता है वह भी यही सिद्ध करता है कि प्रकृति शरीर रूपी घर को साफ कर रही है। अन्त में बुखार की गर्मी बढ़ जाने पर परिणामस्वरूप जब पसीना आने लगता है तब समझें कि प्रकृति को अपने काम में पूरी सफलता मिली है और पसीने में उसी प्रकार की बदबू पाई जाती है दुश्मन के वेश में आया हुआ बुखार क्षतिकारक नहीं मानते अपितु प्राकृतिक चिकित्सा में केवल बुखार को ही नहीं अन्य अनेक रोगों को मित्र मानकर चलते हैं। अत: बुखार के सम्बन्ध में भी हमारी मान्यता है कि बुखार उतारने का प्रयास करना ही मूर्खता है किसी भी प्रयास से बुखार को उतार देने से बुखार का कारण नष्ट नहीं होगा अपितु दवाओं से दबाये जाने पर बुखार पुन: लौट आता है।

2. अजीर्ण हो जाता है।

3. चर्म रोग, हृदय की दुर्बलता तथा मस्तिष्क के रोग के रूप परिवर्तित हो जाता है। अमुक प्रकार के जीवाणु ही विशेष प्रकार के बुखार के कारण होते हैं, उन जीवाणुओं को मार देने से बुखार चला जाता है इस सिद्धान्त में यह तो मानना ही होगा कि जीवाणु भी शरीर की किसी दोषपूर्ण दशा में ही पनपते है इस सिद्धान्त में यह तो मानना ही होगा कि जीवाणु भी शरीर की किसी दोषपूर्ण दशा में ही पनपते हैं। सर्वथा शुद्ध शरीर में बाहर से आये हुए जीवाणु भी जीवित नहीं रह सकते और नहीं पनप सकते हैं। दोषमय दशा में पनपे हुए जीवाणुओं को विषाक्त दवाओं से मार देने पर भी अधिक लाभ नहीं होता। मारे गये जीवाणु भी पड़े हुए दोष की अधिकता के कारण ही बनेंगे।

वर्तमान समय में बुखार कोई रोग नहीं गिना जाता है। शरीर की विभिन्न रूग्ण अवस्थाओं का वह एक लक्षण है ऐसा लिया जाता हैं जिस कारण से बुखार पैदा होता है उसको रोग कहा जाता है। इसलिए वर्तमान समय में बुखार के बदले में उसके कारण के अनुसार ज्वर का विभिन्न नाम दिया जाता है।

साधारण बुखार, मलेरिया, टायफाइड, टायफस, इन्फ्लूएंजा, डेंगू, फाइलेरिया, गर्दन तोड़, काला ज्वर तथा प्लेग आदि नामों से जाना जाता है। जैसे मलेरिया इस कारण फैलता है कि उसके लक्षण और उपचार किस तरह से किया जा सकता है।

मलेरिया : मलेरिया एक इटालियन भाषा का शब्द है। इस भाषा में 'मेला' शब्द का अर्थ है खराब और एरिया' शब्द का अर्थ है हवा अर्थात् खराब हवा के द्वारा जो बुखार उत्पन्न होता है उसी को मलेरिया कहा जाता है।

मलेरिया के सूक्ष्म जीवाणु एनोफिलिस जाति के मच्छरों द्वारा मनुष्य के एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुँचाये जाते हैं। ये जीवाणु शरीर के खून के कणों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट करते हैं इसी से मलेरिया बुखार के रोगी के शरीर में इन रक्त कणों की कमी हो जाती है, परन्तु मलेरिया के कीड़ों के शरीर में घुसते ही आदमी बीमार पड़ जाये ऐसा नहीं होता है जिनका शरीर सबल और दोष रहित है मलेरिया के मच्छरों के काटने पर भी उन्हें कुछ नहीं होता। बहुत से लोग मलेरिया के इलाकों में रहते हैं पर उन्हें मलेरिया नहीं होता। मलेरिया का असली कारण इस शब्द के भीतर ही छुपा हुआ है। कुछ दिन तक बदबू और जहरीली हवा लगने के कारण जब खून कमजोर पड़ जाये और शरीर के भीतर विजातीय पदार्थ जमा हो जाते हैं तभी मलेरिया के कीड़े शरीर के ऊपर अपना असर बढ़ाने में कामयाब होते हैं।

मलेरिया के रोगी को हमेशा बुखार नहीं रहता परन्तु अत्याधिक इन्द्रिय सेवा, अधिक गर्म या ठण्डी हवा के झोंके लेना नुकसानदायक है।

यह नहीं है कि केवल खराब गैस के कारण रक्त खराब हो जाता है। स्वास्थ्य के साथ बहुत अन्याय और अन्य प्रकार के अनियम करने से शरीर के भीतर बहुत अधिक परिमाण में दूषित पदार्थों का संग्रह होने से भी खून की कणिकाएँ अत्यन्त दुर्बल हो जाती है जिससे मलेरिया विषाणु उन पर आसानी से आक्रमण करते हैं।

कारण :- 1. पेट की खराबी और गन्दगी से होती है। अनियमित आहार-विहार से सम्भव होता है।

2. मच्छर का जहर केवल इस संचित गन्दगी में उभार पैदा करके मलेरिया ज्वर द्वारा हमें इस बात की सूचना देता है कि शरीर में काफी मल एकत्र हो गया है।

3. बरसात के बाद ऐसी हवा में श्वास लेते हैं जो पृथ्वी से निकली हुई गंदी गेसों से लदी होती है।

4. ऐसे तालाब, झील या बरसात से भरे गढ्ढों के पानी मे नहाना जिनका पानी पेड़ के पत्ते और कूड़ा आदि गिरते रहने से सड़ गया हो उसमें मलेरिया विष उत्पन्न हो गया और वह विष (एनोफिलिस) नामक मच्छरों के जरिये फैल रहा हो। अधिक दिन तक कूलर में पानी जमा होने पर भी होता है।

लक्षण :- मलेरिया के लक्षणों की निम्न तीन अवस्थाएँ हुआ करती है।

1 **शीत अवस्था** - उबकाइयाँ आती हैं, वमन होता है। देह में दर्द रहता है और प्यास लगती है। कभी-कभी रोगी ठण्ड से थर-थर कांपने लगता है, पित्त की वमन करता है और उसके हाथ पांव बर्फ से ठण्डे हो जाते हैं।

2. उत्ताप अवस्था - कुछ देर जाड़ा आने के बाद सारा शरीर गर्म होता है। उत्ताप 103-104 डिग्री तक बढ़ जाता है। रोगी बहुत छटपटाता है और ताप अवस्था बहुत देर तक बनी रहती है।

3. पसीने की अवस्था :- इस अवस्था के आने पर समझना चाहिए कि अब बुखार उतरने वाला है। मलेरिया का बुखार पसीना देकर छूटता है और तब रोगी को आराम मालूम होता है, किन्तु फिर बुखार आता है। यह अवस्था ज्यादा दिन तक रहे तो रोगी की तिल्ली और जिगर बढ़ जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा :

1. यदि रोगी की स्थिति ठीक है अर्थात् बहुत तेज 104 डिग्री से ऊपर बुखार, नहीं है तो सर्वप्रथम रोगी को वमन और नेति करवा देना चाहिए। इससे सिर दर्द और शरीर का भारीपन ठीक हो जायेगा।

2. मौसम के अनुसार ठण्डे या गर्म पानी में रुचि के अनुसार नीबू मिलाकर पिला दें।

3. पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी 20-30 मिनट रखें उसके बाद एनिमा करा दें।

4. एनिमा के बादा कुछ मिनट कटि स्नान या हिप बाथ दें। इससे बुखार की तेजी थम जाती है।

5. अगर कंपकपी या जाड़ा देकर आने वाला बुखार है तो प्रकृति की उस स्वाभाविक मांग का आदर करना होगा उसी समय गरम-गरम पानी में नींबू मिलाकर या सादा पानी पिलायें फिर पैरों को गर्म स्नान दें।

6. अगर बुखार कम नहीं होता है तो सिर पर ठण्डे पानी की जलधारा बहाई जा सकती है अथवा खूब ठण्डे पानी में भीगा तौलिया सिर माथे पर रखना चाहिए थोड़ी-थोड़ी देर में इसे भिगोते रहें। तेज बुखार का मस्तिष्क पर कुप्रभाव नहीं होगा। इससे सिर में खून का दबाव कम हो जायेगा। रोगी को सहजता से नींद आ जायेगी। ध्यान रहे बर्फ का सीधा प्रयोग माथे पर न करें।

(क) तौलिया भिगोकर शरीर को पोंछना।

(ख) सारे शरीर पर गीली चादर की लपेट का प्रयोग करना चाहिए।

घरेलू उपचार :-

1. नीबू रस पानी मिलाकर दूध को फाड़कर उसका पानी पिलाने से काफी आराम मिलता है।

2. नीम की पत्तियाँ, गिलोय, सौफ, अजवायन, सबको पीसकर या उबालकर इस पानी को थोड़े-थोड़े समय बाद पिलाना चाहिए।

3. मौसम की सब्जियों का सूप नीबू रस मिलाकर पिलाने से आराम मिलता है।

4. घी के साथ लहसुन या भुनी फिटकरी 2 रत्ती किसी चीज में मिलाकर खिला देने से ज्वर प्राय: नहीं आता।

5. तुलसी की 7 से 10 पत्तियाँ पानी में पीसकर और गरम करके प्रतिदिन दोनों समय पीने से मलेरिया ज्वर शीघ्र भागता है।

6. मौसमी फल का रस लाभदायक है।

यौगिक उपचार :

1. कपाल भाति व वमन क्रिया।
2. दीर्घ प्राणायाम।
3. अनुलोम-विलोम प्राणायाम।

– **ओ३म योग संस्थान (शाखा- गुड़गांव, हरियाणा)**

आर्य समाज कलकत्ता, 19, विधान सारणी के तत्वावधान में
आर्य समाज कलकत्ता का 137वाँ वार्षिकोत्सव 24 दिसम्बर, 2022 से 1 जनवरी, 2023 तक तथा
महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता आगमन के 150वें वर्ष के उपलक्ष्य में
30 दिसम्बर, 2022 से 1 जनवरी, 2023 (शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार) की तिथियों में

आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

स्थान – हृषिकेष पार्क, आमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता

आर्य समाज कलकत्ता, 19 विधान सरणी का 137वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 24 दिसम्बर, 2022 से 1 जनवरी, 2023 की तिथियों में आयोजित किया गया है और महर्षि दयानन्द सरस्वती के कलकत्ता आर्य समाज में आगमन के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आर्य महासम्मेलन का आयोजन आर्य समाज कलकत्ता की ओर से दिनांक 30 दिसम्बर, 2022 से 1 जनवरी, 2023 की तिथियों में आयोजित किया गया है।

ज्ञातव्य हो कि राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज 16 दिसम्बर, 1872 को प्रथम बार कलकत्ता पधारे थे और 16 अप्रैल, 1873 तक बंगाल में चार मास तक प्रवास किया। इस प्रकार वर्ष 2022 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बंगाल प्रवास के 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस महनीय वेला पर क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत को श्रद्धांजलि समर्पित करने के उद्देश्य से आर्य समाज कलकत्ता के नेतृत्व मे बंगाल कि सभी समाजें संयुक्त रूप से आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर रही हैं। अतः इस यादगार सुअवसर पर हम सब बंगवासी आर्य समाजी, आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासियों, विद्वानों एवं आर्यजनों का पावन आशीर्वाद व प्रेरणा प्राप्त करना चाहते हैं। अतः आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

सम्पर्क – ध्रुवचन्द्र (प्रधान) मो.:– 9330116938, दीपक आर्य (मंत्री) मो. –7980496276, दूरभाष :– 033–22413439

आर्य समाज, पहासू, जिला–बुलन्दशहर (उ. प्र.) द्वारा
दिनांक 10 से 12 दिसम्बर, 2022 की तिथियों में

'सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार महोत्सव' का कार्यक्रम

आर्य समाज मैदान पहासू, जिला–बुलन्दशहर में आयोजित किया गया है

आर्य समाज, पहासू, जिला–बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित 10 से 12 दिसम्बर, 2022 के कार्यक्रम में आर्य समाज के अनेक विद्वान् एवं भजनोपदेशक भाग लेकर अपने प्रचनों एवं भजनों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का कार्य करेंगे। दैनिक कार्यक्रम निम्न प्रकार रहेगा – प्रतिदिन यज्ञ, वेद कथा – प्रातः 9 से 11 बजे तक, व्याख्यान, प्रवचन एवं भजनोपदेश मध्यान्ह 1 से 5 बजे तक, प्रवचन एवं भजनोपदेश सायं 7 से 11 बजे तक होगा। आर्यजनों से निवेदन है कि उपरोक्त कार्यक्रम में पधारकर विद्वानों के प्रवचन का लाभ उठायें।

आर्य समाज नवी करीम के धर्माचार्य श्री ऋषिपाल शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री नन्दराम सिंह जी की स्मृति में
30 नवम्बर, 2022 को
ग्राम–औंधाखेड़ा, पो.–रामनगर,
अलीगढ़ (उ. प्र.) में श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

आर्य समाज नवी करीम, दिल्ली के धर्माचार्य श्री ऋषिपाल शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री नन्दराम सिंह जी का विगत 10 नवम्बर, 2022 को 103 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। उनकी स्मृति में दिनांक 30 नवम्बर, 2022 को उनके पैतृक गाँव ग्राम–औंधा खेड़ा, पो.–रामनगर, दादों, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शांति यज्ञ के अवसर पर वेद कथा तथा गीता का उपदेश संन्यासियों एवं विद्वानों द्वारा दिया गया। इस शांति यज्ञ कार्यक्रम में जहाँ परिवार एवं सगे सम्बन्धियों ने भाग लिया वहीं, गांव के आस–पास के हजारों लोगों ने भाग लिया। शास्त्री जी द्वारा गांव में इस प्रकार का कार्यक्रम आयोजित करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया। गांव तथा आस–पास के गणमान्य व्यक्तियों ने शास्त्री जी की सराहना करते हुए ग्रामवासियों से निवेदन किया कि पुराने घिसे–पिटे रिवाजों को खत्म करके अन्तिम संस्कार तथा मृत्यु भोज की जगह श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप हम सभी को करना चाहिए।

इस श्रद्धांजलि सभा में शांति यज्ञ का कार्यक्रम ब्र. पूरन सिंह जी ने कराया। कार्यक्रम में संगीत के माध्यम से रीमा शास्त्री, तथा अल्का आर्या एवं श्री अजीत सिंह अंजाना ने जीवन–मृत्यु पर भजन प्रस्तुत किये, जिसे लोगों ने खूब सराहा। शांति पाठ श्री मानवेन्द्र शास्त्री जी द्वारा कराया गया।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

क्षेत्रीय आर्य समाजों तथा यज्ञ समिति, गाजियाबाद के तत्वावधान में चतुर्वेद पारायण राष्ट्र रक्षा यज्ञ का विशाल कार्यक्रम हुआ आयोजित

दिनांक 6 नवम्बर से 13 नवम्बर, 2022 तक चले इस विशाल यज्ञ में आर्य जगत की महान विभुतियों ने सम्मिलित होकर क्षेत्र की जनता को वेद ज्ञान की गंगा में स्नान कराया

यज्ञ भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का स्रोत है – स्वामी आर्यवेश

गत् 6 से 13 नवम्बर, 2022 तक गाजियाबाद जिले की ग्रामीण क्षेत्र की आर्य समाजों ने मिलकर राजेश पायलेट महाविद्यालय, ग्राम–सकलपुरा (लोनी), गाजियाबाद के प्रांगण में चतुर्वेद पारायण राष्ट्र रक्षा यज्ञ का विशाल आयोजन किया। इस यज्ञ में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी अखिलानन्द जी, स्वामी कर्मवीर जी आदि के अतिरिक्त आर्य भजनोपदेशक श्री वेदपाल जी बागपत, प्रसिद्ध विदुषी भजनोपदेशिका बहन अंजलि आर्या, भजनोपदेशिका निकिता आर्या, आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य तथा श्री कुलदीप विद्यार्थी आदि ने कार्यक्रम में पधारकर अपने वेद प्रवचनों से ज्ञान की गंगा बहाई और क्षेत्र के लोगों ने ज्ञान लाभ प्राप्त किया। यज्ञ में सर्वश्री देवमुनि पल्ला, श्री देवमुनि खेला, श्री राजकुमार शास्त्री, श्री केशव शास्त्री, श्री रविदत्त शास्त्री एवं श्री उदयवीर शास्त्री ने विभिन्न वेदियों पर आचार्य की भूमिका निभाई। यज्ञ की व्यवस्था में शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम व गुरुकुल गाजियाबाद के ब्रह्मचारियों ने विशेष योगदान दिया। श्री विजेन्द्र आर्य, श्री सेवाराम त्यागी, श्री जितेन्द्र शास्त्री आदि ने यज्ञ वेदी की साज–सज्जा की। कार्यक्रम में शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद के उपाध्यक्ष स्वामी सूर्यवेश जी, प्रिं. दिनेश शुक्ला, श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी, डॉ. राकेश आर्य, श्री आर.डी. गुप्ता, प्रधान श्री धर्मवीर जी, श्री ओमवीर भाटी, श्री वीरेश भाटी, श्री मुकेश नागर एडवोकेट, श्री चन्द्रपाल शास्त्री, श्री सत्यवीर चौधरी, श्री रामेश्वर सरपंच, श्री मूलचन्द आर्य, श्री अजयपाल आर्य, श्री जागरत्न आर्य, श्री सागर खारी, श्री भुवनेश्वर दत्त शास्त्री, श्री कमल सिंह आर्य, श्री महेन्द्र आर्य आदि गणमान्य महानुभाव विशेष आमंत्रित रहे। इस पूरे कार्यक्रम का संचालन एवं सम्पूर्ण आयोजन की व्यवस्था का दायित्व प्रधान श्री नरेन्द्र बंसल, उपप्रधान श्री बबली कसाना तथा श्री ज्ञानचन्द कसाना कोषाध्यक्ष, श्री जयप्रकाश कसाना सचिव, श्री तेजपाल सिंह आर्य महासचिव आदि ने बड़ी कर्मठता एवं कुशलता के साथ संभाला।

कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए और उन्होंने अपने सारगर्भित प्रवचनों से उपस्थित जनता का मार्गदर्शन किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ को भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का मुख्य साधन बताते हुए कहा कि यज्ञ से मनुष्य की न केवल भौतिक बल्कि आध्यात्मिक उन्नति होती है। यज्ञ का दूसरा नाम परोपकार एवं सपर्मण है। जब मनुष्य के जीवन में परोपकार की भावना ओत–प्रोत हो जाती है तो उसके हृदय में प्राणी मात्र के लिए प्रेम उत्पन्न हो जाता है और जब व्यक्ति सभी प्राणियों से प्रेम एवं मित्रता का भाव रखेगा तो उसकी आत्मिक उन्नति होगी। उसके मन में ये मेरा और ये पराया है यह भावना नहीं उठेगी, बल्कि वह सबमें अपनी जैसी आत्मा देखते हुए उनके प्रति आत्मीयता, सहृदयता और प्रेम का व्यवहार करेगा। इसी प्रकार यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है और इस पर्यावरण में वायु, जल, पृथ्वी तथा आकाश में फैलने वाले प्रदूषण यज्ञ करने से समाप्त होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि अपने चारों ओर के वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए हम सब लोग यज्ञ करें। यज्ञ में सभी हव्य पदार्थ शुद्ध होने चाहिए। उसमें शुद्ध घी, औषधि युक्त सामग्री, मिस्ट पदार्थ और सुगन्धित पदार्थ डाले जाने चाहिए। अग्नि इन सभी पदार्थों को सूक्ष्म बनाकर वायुमण्डल में पहुंचा देती है और चारों ओर यज्ञ में डाली गई सभी पदार्थों के सूक्ष्म तत्त्व पूरे वायुमण्डल में फैल जाते हैं और उन्हीं से सभी प्राणी मनुष्य या पशु–पक्षी आदि श्वांस लेते हैं और श्वांस के द्वारा ये सभी औधियां हमारे शरीर में जाकर शरीर में हानिकारक कीटाणुओं तथा विषाणुओं को समाप्त करती हैं। इस प्रकार यज्ञ हमारी शारीरिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का मजबूत साधन है। अतः सभी को यज्ञ करने का संकल्प लेना चाहिए।

क्षेत्र की सभी आर्य समाजों की ओर से यज्ञ समिति के महासचिव श्री तेजपाल सिंह जी ने स्वामी आर्यवेश जी का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि जब भी आप कोई बड़ा आन्दोलन चलायें तो इस क्षेत्र की जनता आपका तन–मन–धन से सहयोग करेगी और पूरा जन–समर्थन आपके साथ रहेगा। उन्होंने स्वामी जी को शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया। इसी प्रकार इस सात दिवसीय चतुर्वेद पारायण यज्ञ में पधारने वाले सभी संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों आदि को भी सम्मानित किया गया और बड़े उत्साह और धूमधाम के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ●

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य 4100/– रु. में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित [illegible] **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–42415359, 23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।